बुढ़िया और उसका सूअर

लेखक - पॉल

बुढ़िया और उसका सूअर

लेखक - पॉल
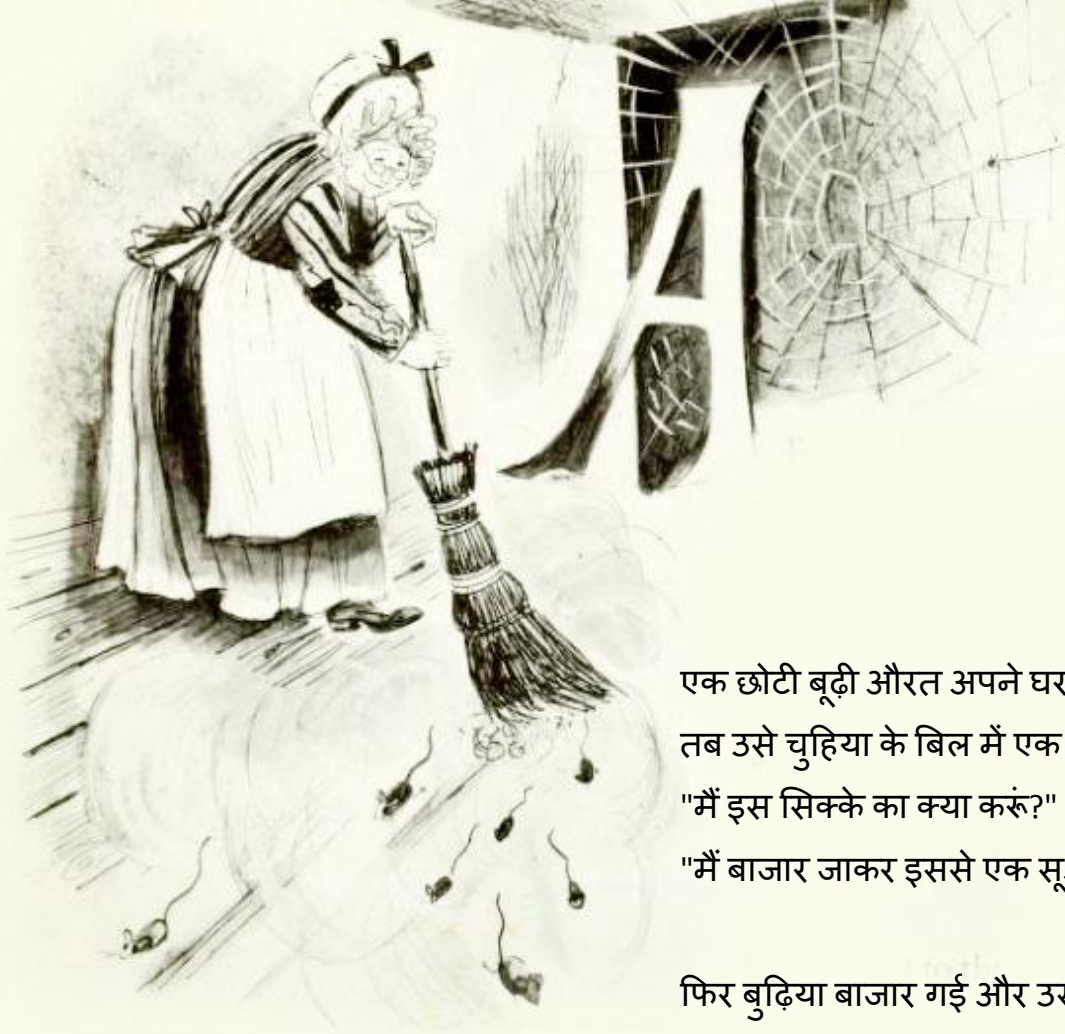
एक छोटी बूढ़ी औरत अपने घर में झाड़ू लगा रही थी.
तब उसे चुहिया के बिल में एक सिक्का पड़ा मिला.
"मैं इस सिक्के का क्या करूं?" बूढ़ी औरत ने खुद से कहा.
"मैं बाजार जाकर इससे एक सूअर खरीदूंगी."

फिर बुढ़िया बाजार गई और उसने एक सूअर खरीदा.

घर वापिस आते समय उन्हें एक बाड़ मिली.

तब बुढ़िया ने सूअर से कहा :

"सूअर, तुम बाड़ के ऊपर कूदो,

नहीं तो आज रात मैं घर नहीं पहुँच पाऊंगी."

"मैं तो बाड़ पर नहीं कूदूंगा," सूअर ने कहा.

कुछ आगे जाने पर बुढ़िया को एक कुत्ता मिला.

बुढ़िया ने कुत्ते से कहा :
"कुत्ते, कुत्ते सूअर को काट!
सूअर, बाड़ पर कूदे नहीं,
फिर मैं घर कैसे पहुंचू."

पर कुत्ते ने कुछ नहीं किया.

कुछ आगे जाकर बुढ़िया को एक लकड़ी मिली.

बुढ़िया ने लकड़ी से कहा :

"लकड़ी, लकड़ी कुत्ते को मार,

कुत्ता, सूअर को काटे नहीं,

सूअर, बाड़ पर कूदे नहीं,

फिर मैं घर कैसे पहुंचू."

पर लकड़ी ने कुछ नहीं किया.

कुछ आगे जाकर बुढ़िया को आग मिली.

बुढ़िया ने आग से कहा:

"आग, आग, लकड़ी जला!

लकड़ी, कुत्ते को मारे नहीं,

कुत्ता, सूअर को काटे नहीं,

सूअर, बाड़ पर कूदे नहीं,

फिर मैं घर कैसे पहुंचू."

पर आग ने कुछ नहीं किया.
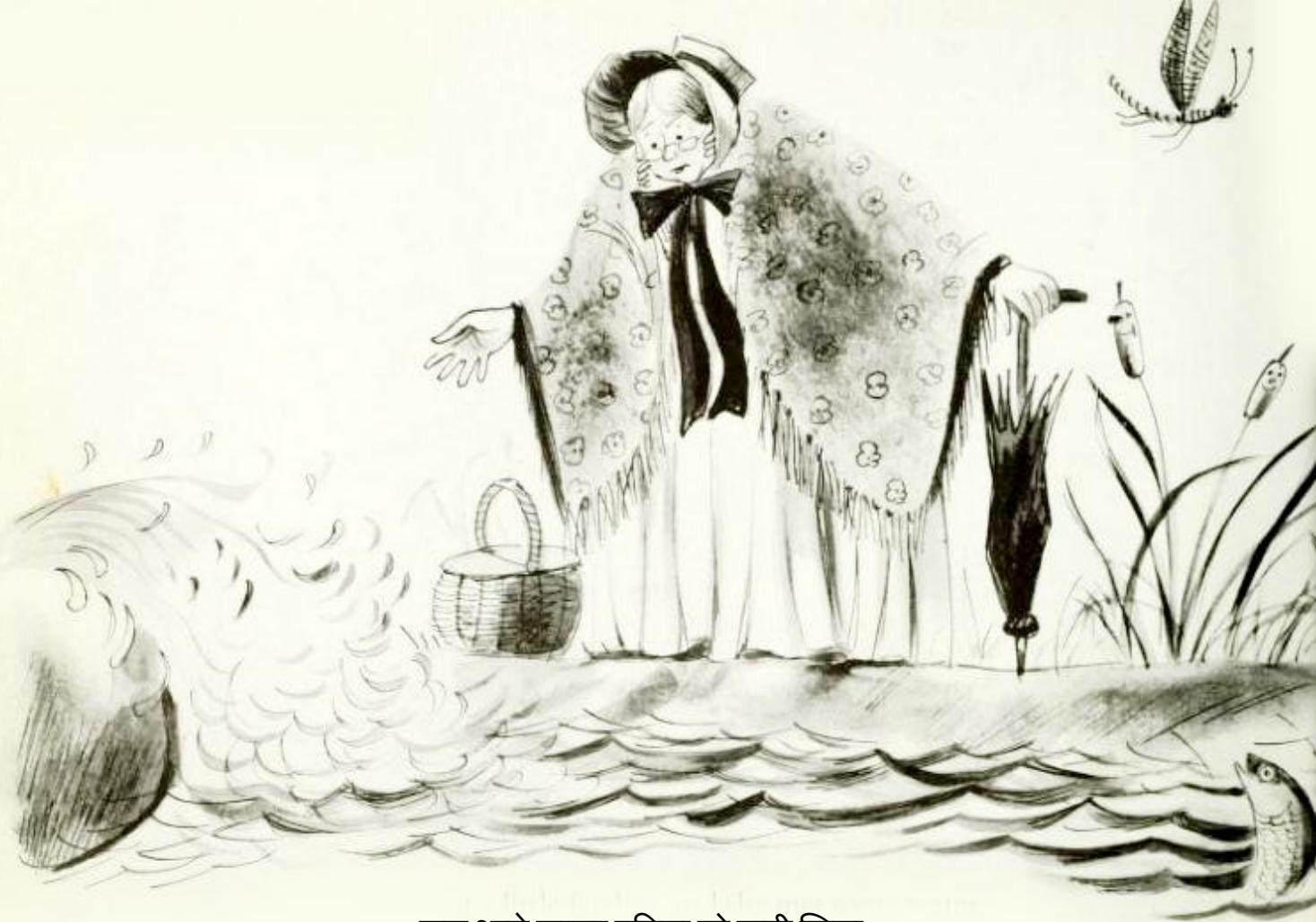
कुछ आगे जाकर बुढ़िया को पानी मिला.

बुढ़िया ने पानी से कहा :
"पानी, पानी आग बुझा!
आग, लकड़ी जलाए नहीं,
लकड़ी, कुत्ते को मारे नहीं,
कुत्ता, सूअर को काटे नहीं,
सूअर, बाड़ पर कूदे नहीं,
फिर मैं घर कैसे पहुंचू."

पर पानी ने कुछ भी नहीं किया.
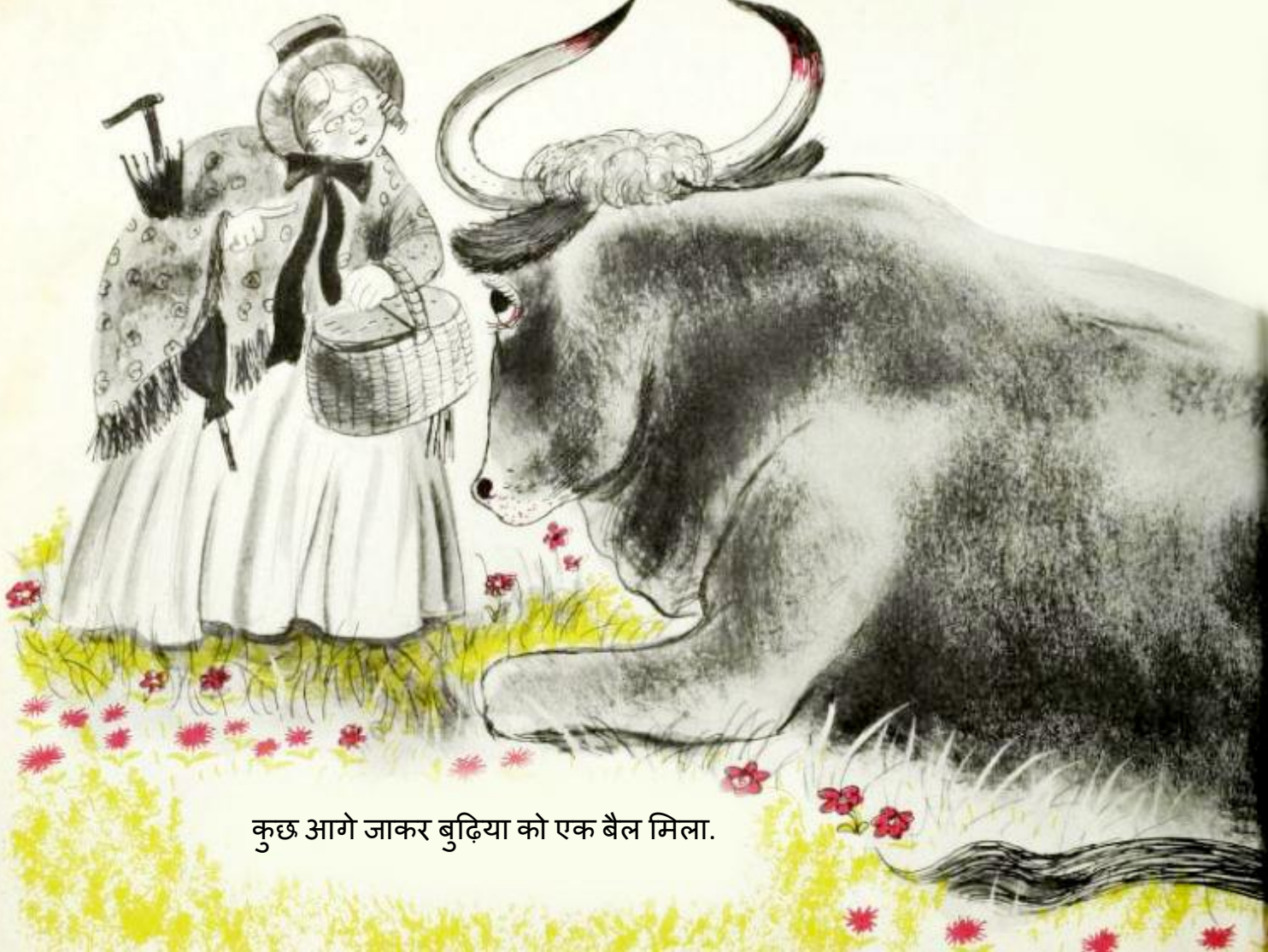
कुछ आगे जाकर बुढ़िया को एक बैल मिला.

बुढ़िया ने बैल से कहा :

"बैल, बैल पानी पी!

पानी, आग बुझाए नहीं,

आग, लकड़ी जलाए नहीं,

लकड़ी, कुत्ते को मारे नहीं,

कुत्ता, सूअर को काटे नहीं,

सूअर, बाड़ पर कूदे नहीं,

फिर मैं घर कैसे पहुंचू."

पर बैल वहीँ बैठा रहा.

कुछ आगे जाकर बुढ़िया को कसाई मिला.

बुढ़िया ने कसाई से कहा :

कसाई, कसाई, बैल मार!

बैल, पानी पिए नहीं,

पानी, आग बुझाए नहीं,

आग, लकड़ी जलाए नहीं,

लकड़ी, कुत्ते को मारे नहीं,

कुत्ता, सूअर को काटे नहीं,

सूअर, बाड़ पर कूदे नहीं,

फिर मैं घर कैसे पहुंचू."

पर कसाई ने कुछ नहीं किया.
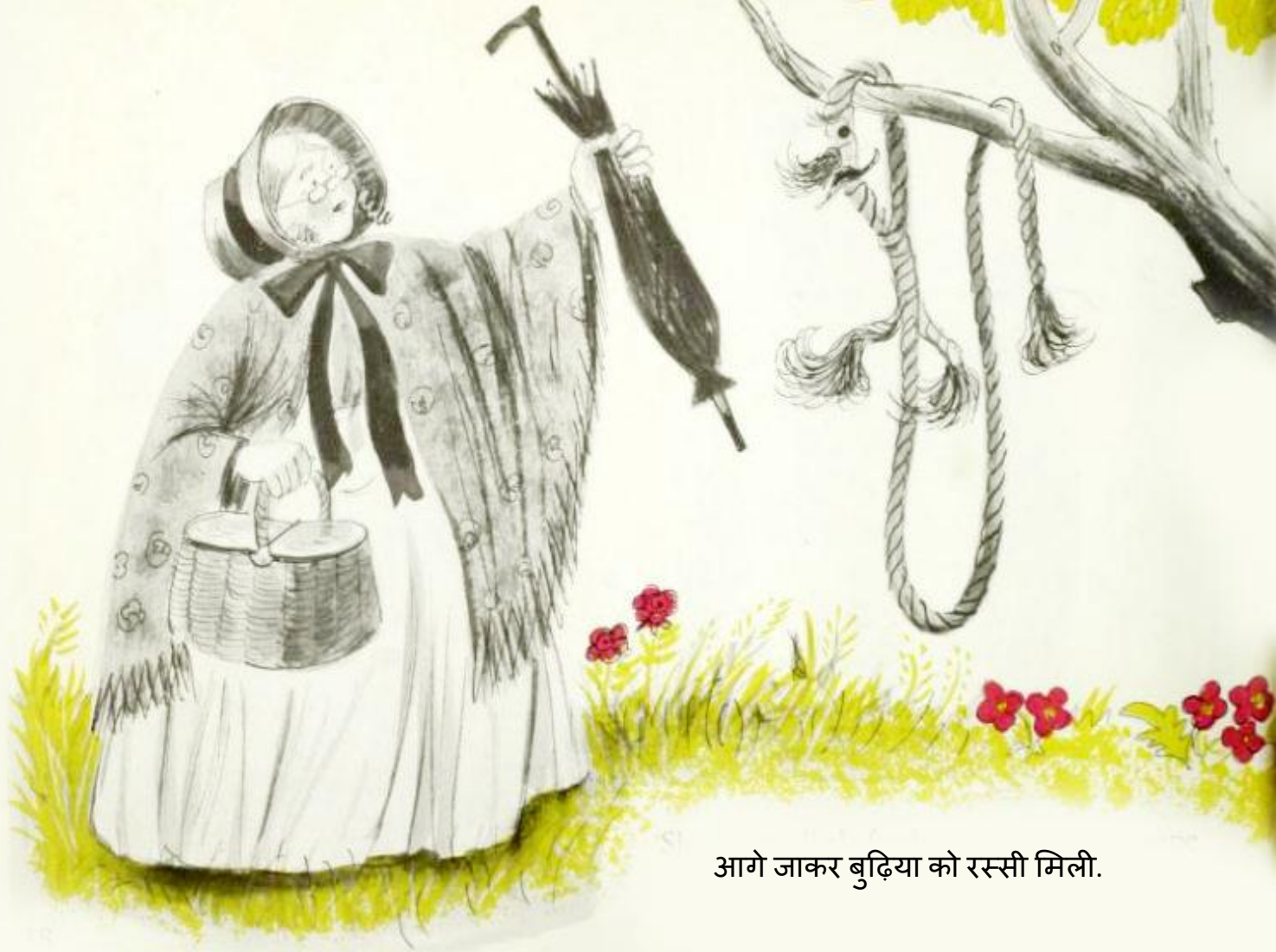
आगे जाकर बुढ़िया को रस्सी मिली.

बुढ़िया ने रस्सी से कहा :

रस्सी, रस्सी, कसाई को लटका!

कसाई, बैल को मारे नहीं,

बैल, पानी पिए नहीं,

पानी, आग बुझाए नहीं,

आग, लकड़ी जलाए नहीं,

लकड़ी, कुत्ते को मारे नहीं,

कुत्ता, सूअर को काटे नहीं,

सूअर, बाड़ पर कूदे नहीं,

फिर मैं घर कैसे पहुंचू."

पर रस्सी ने कुछ नहीं किया.

कुछ आगे चलकर बुढ़िया को एक चूहा मिला.

बुढ़िया ने चूहे से कहा :

"चूहे, चूहे, रस्सी कुतर!

रस्सी, कसाई को लटकाए नहीं,

कसाई, बैल को मारे नहीं,

बैल, पानी पिए नहीं,

पानी, आग बुझाए नहीं,

आग, लकड़ी जलाए नहीं,

लकड़ी, कुत्ते को मारे नहीं,

कुत्ता, सूअर को काटे नहीं,

सूअर, बाड़ पर कूदे नहीं,

फिर मैं घर कैसे पहुंचू."

पर चूहा वहीँ बैठा रहा.

कुछ आगे जाकर बुढ़िया को एक बिल्ली मिली.

बुढ़िया ने उससे कहा :
"बिल्ली, बिल्ली, चूहे को खा!
चूहा, रस्सी कुतरे नहीं,
रस्सी, कसाई को लटकाए नहीं,
कसाई, बैल को मारे नहीं,
बैल, पानी पिए नहीं,
पानी, आग बुझाए नहीं,
आग, लकड़ी जलाए नहीं,
लकड़ी, कुत्ते को मारे नहीं,
कुत्ता, सूअर को काटे नहीं,
सूअर, बाड़ पर कूदे नहीं,
फिर मैं घर कैसे पहुंचू."
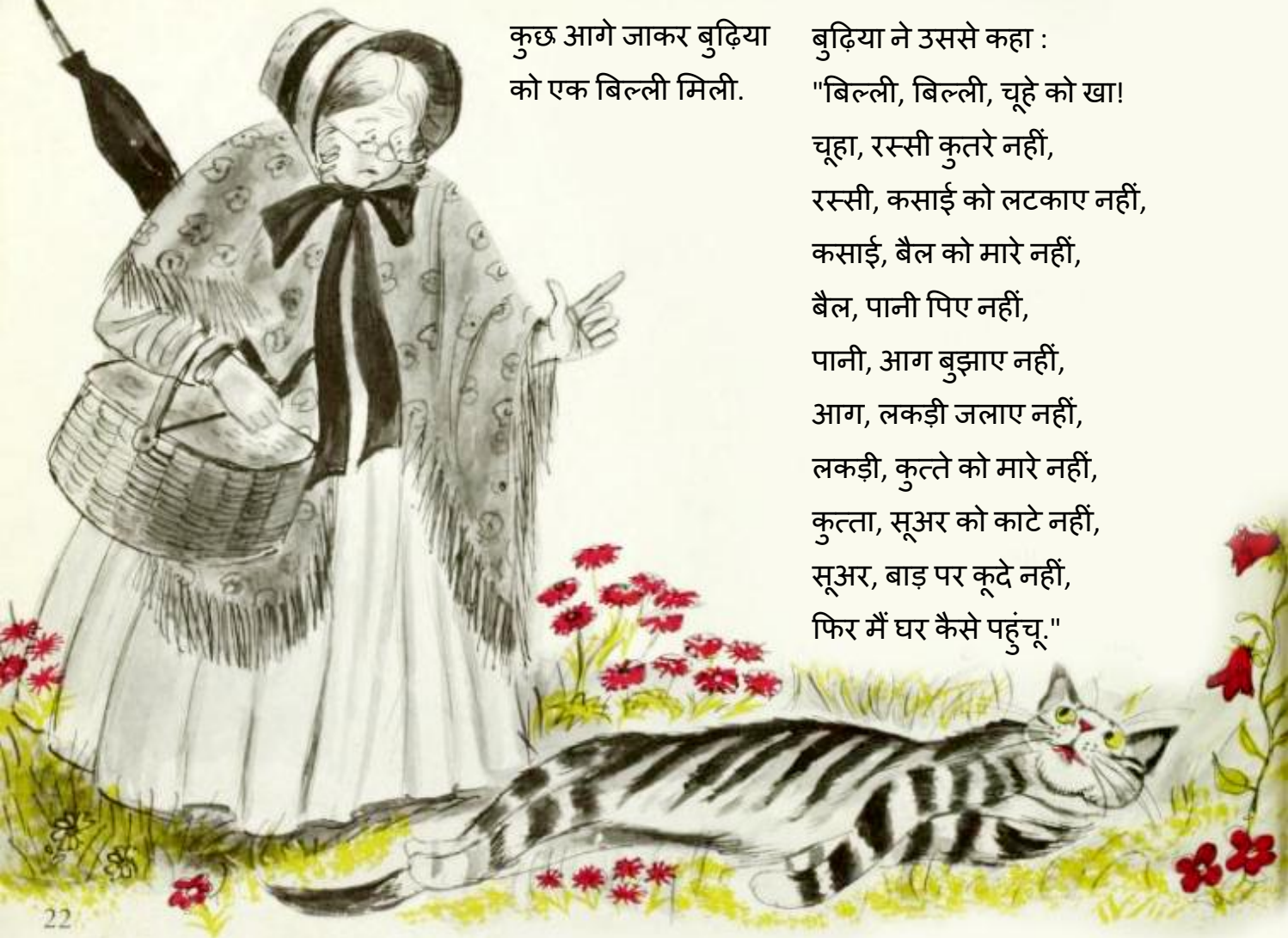
बिल्ली ने कहा :

"अगर तुम मुझे एक कटोरा दूध दोगी, तो मैं चूहे को खा जाऊंगी."

फिर बुढ़िया ने बिल्ली को एक कटोरे में दूध दिया.

बिल्ली झट से सारा दूध पी गई.

फिर बिल्ली चूहे खाने को दौड़ी.

तब चूहा, रस्सी कुतरने दौड़ा.

रस्सी का फंदा, कसाई को लटकाने को दौड़ा.
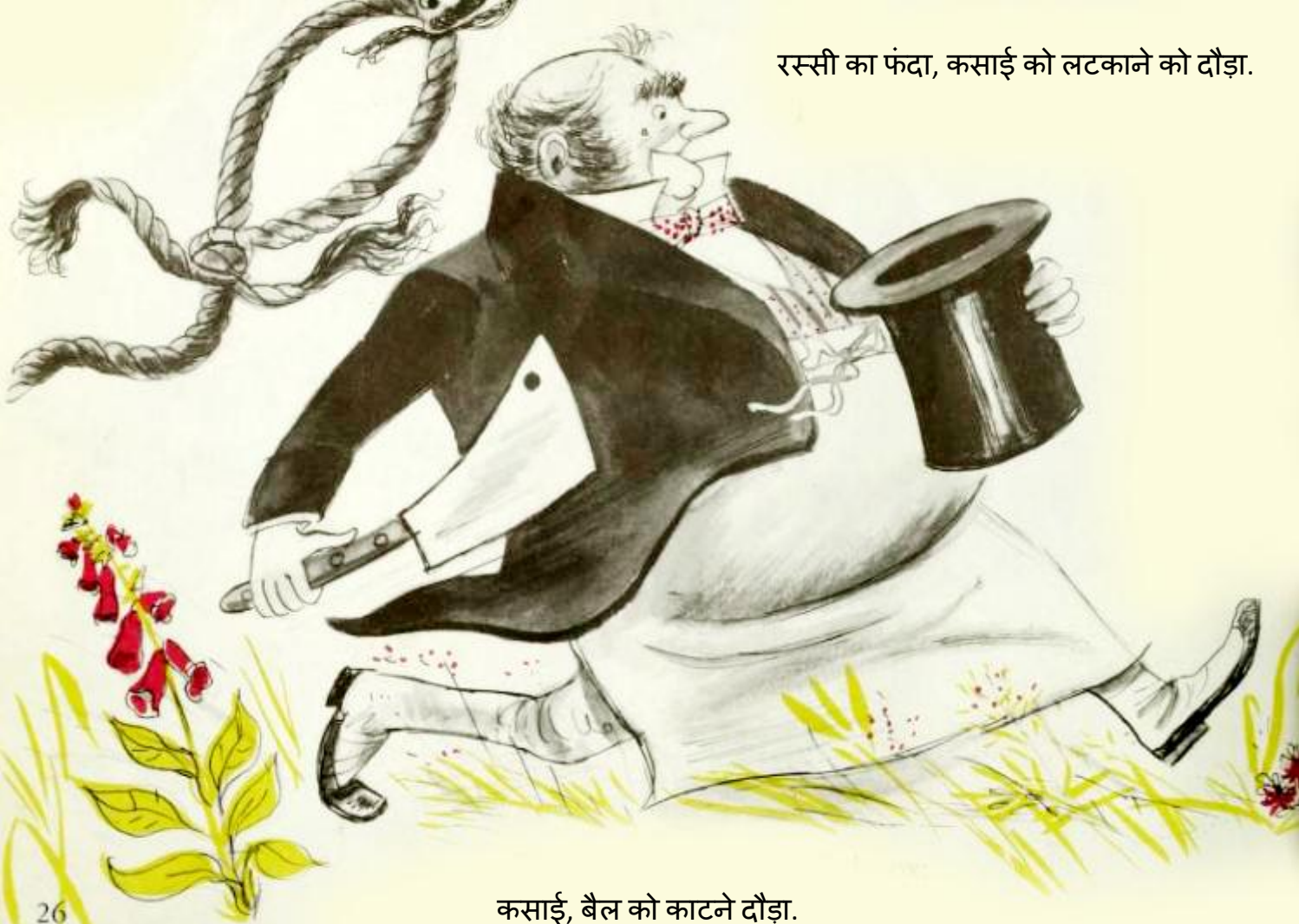
कसाई, बैल को काटने दौड़ा.

बैल ने पानी पीना शुरू किया.
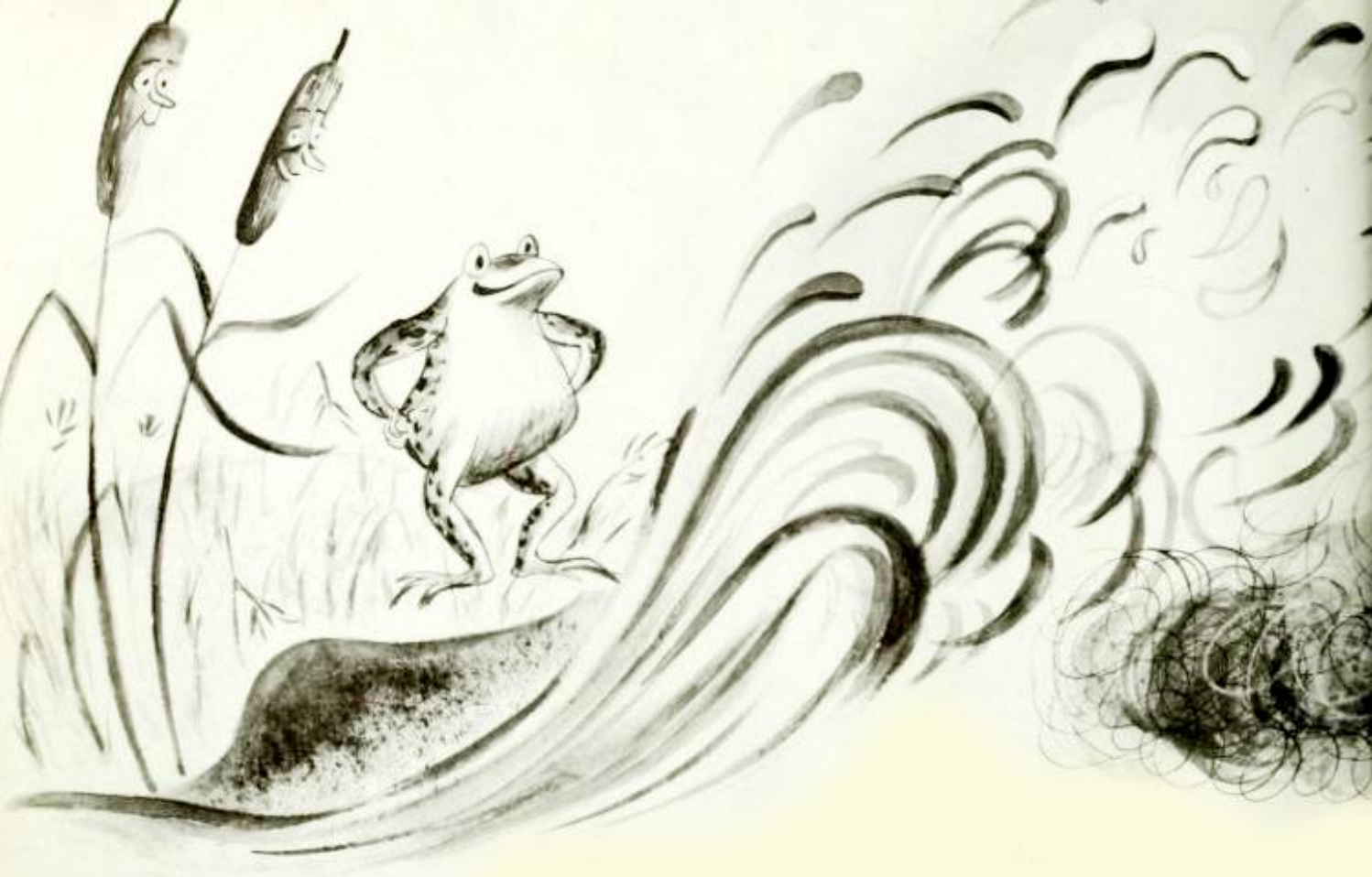
फिर पानी, आग बुझाने दौड़ी.

फिर आग, लकड़ी जलाने दौड़ी.

फिर लकड़ी, कुत्ते को पीटने दौड़ी.
और कुत्ता, सूअर को काटने दौड़ा.

फिर सूअर बाड़ पर से कूदा.

तब जाकर बुढ़िया अपने घर वापिस पहुंची.